heart-burning to over ten crores Telugus today is agonising delay in officially recognising Telugu a classical language. It has been pointed out that Telugu is the largest spoken language in the country, next only to Hindi. In addition, Telugu ranks among the oldest Dravidian languages. Telugu fully meets criteria mentioned in the Ministry of Home Affairs Notification dated 24.11.2005.

The State Government has pointed out that Telugu language is one of the oldest Dravidian languages. It has more than 1500 year long history. Renowned King Krishna Devaraya who ruled the South in the 15th century characterised Telugu as the best among Indian languages.

Sir, a unanimous Resolution adopted by Andhra Pradesh State Assembly seeking 'classical Language' status to Telugu was submitted to the Government of India.

Late Prime Minister Shrimati Indira Gandhi, on 9th April, 1981, declared that Telugu is one of the oldest languages and is spoken by a very large number of people.

So, all available records suggest that Telugu antiquity dates back to more than 200 years. Even going by the criteria given in official notification mentioned according Telugu the status of classical language is long over due. The Andhra Pradesh Government has requested several times to expedite the process of granting Telugu the status of classical language earlier. I, therefore, once again request the Government of India to take an early decision in this regard.

Demand for investigation by a central agency into the alleged bogus procurement of paddy in Chhattisgarh

श्री मोती लाल वोरा (छत्तीसगढ़) : महोदय, छत्तीसगढ़ में पिछले वर्ष धान की अच्छी उपज हुई थी और तब मात्र 30 लाख टन की खरीद हुई थी। इस वर्ष जबकि कई जिले सूखे की चपेट में हैं, सरकार द्वारा लगभग 37 लाख टन धान की खरीद किया जाना स्वयं ही संदेह पैदा करता है।

छत्तीसगढ़ में इस बार धान की खरीद में बहुत बड़े स्तर पर अनियमितताएं हैं। फर्जी खरीद का यह आंकड़ा 10 लाख टन से भी अधिक का है। सरकार ने एक एकड़ में औसत 15 क्विंटल धान का उत्पादन तय किया है। धान बेचने वाले किसानों के पास जितनी खेती की जमीन है, उसमें होने वाले उत्पादन से कई गुना अधिक धान उससे खरीदा गया।

प्रदेश में लगभग 1500 सोसायटियों के माध्यम से धान की खरीद हुई है, जिनमें से अधिकांश ने फर्जी खरीद की है। जिन किसानों के पास जमीन नहीं है, उनसे इन सोसायटीज ने सौ क्विंटल और उससे अधिक धान खरीदा है और ऐसी सोसायटीज की संख्या दस हजार से भी ज्यादा होने का अनुमान है। एक किसान से धान खरीदा गया जिसका नाम है - बाजार, पिता का नाम शुक्रवार और किसान नं0 एमसी 4500430101008, जो फर्जी है। यह एक उदाहरण है। अनुमान है कि धान की फर्जी खरीद में अरबों रुपये की अनियमितता हुई है।

मेरा सरकार से अनुरोध है कि पूरे प्रकरण की जांच किसी केन्द्रीय जांच एजेंसी से कराई जाए, ताकि दोषियों के विरुद्ध कार्यवाही की जा सके।